अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जनवरी–2023

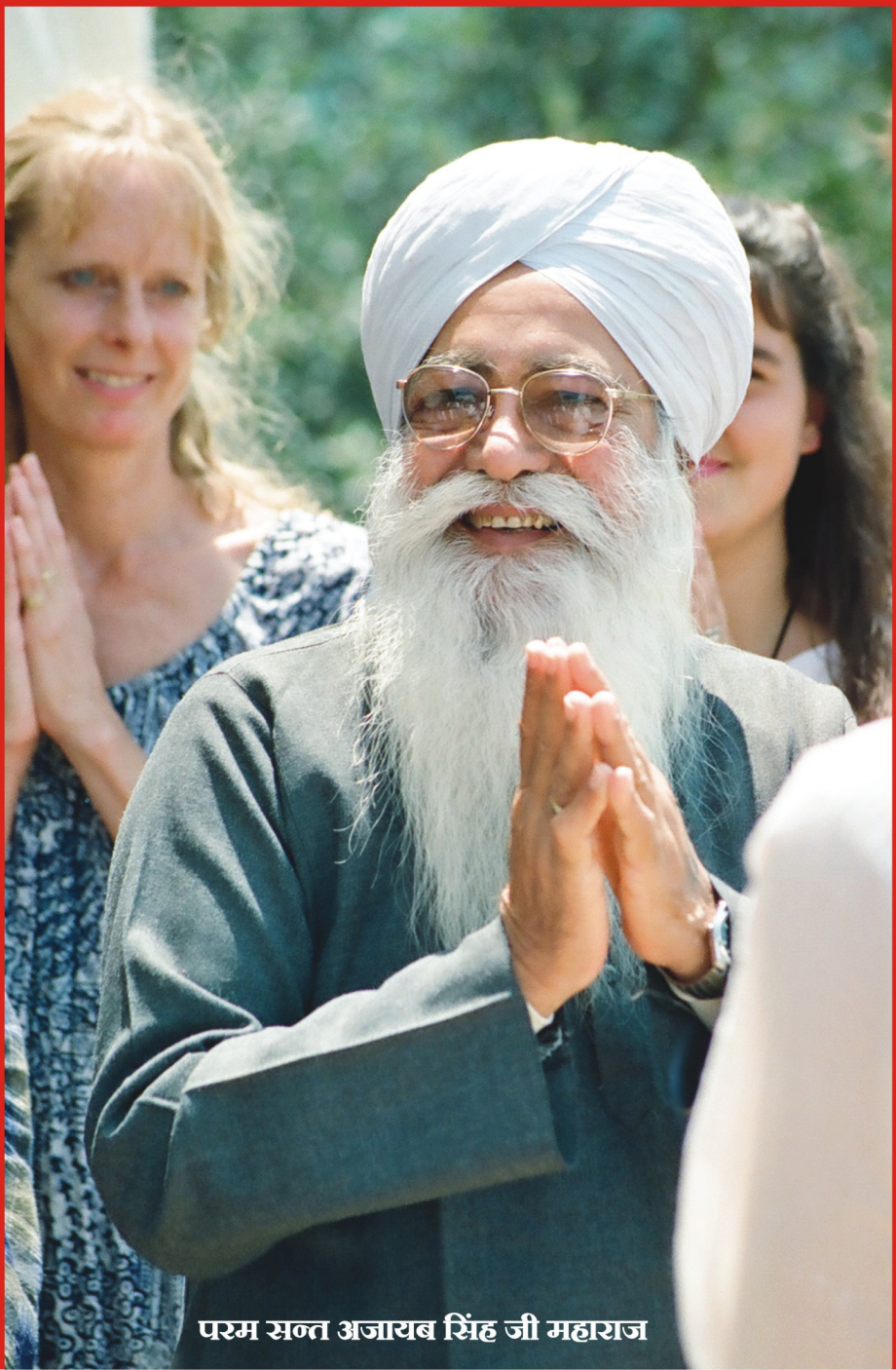

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नये साल का सन्देश

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नये साल के इस अवसर पर और आगे भी हमेशा आप पर सतगुरु का प्यार और दया बनी रहे। परमात्मा इतना दयालु है कि वह हम गरीब–तड़पती आत्माओं को मुक्ति दिलाने के लिए संसार में आता है। परमात्मा दया करके हमें सच्ची राह दिखाता है।

संसार में आए सभी गुरुओं ने यही कहा है, ''परमात्मा से प्रेम करें, अपने अंदर नम्रता रखें। काम, क्रोध और लोभ को त्यागें।'' जिन शिष्यों ने गुरुओं के वचनों का पालन किया वे खुश रहें। हम गुरुओं की महिमा को कैसे बयान कर सकते हैं।

परमात्मा कृपाल ने संसार में आकर हम पर दया बरसाई और आज भी हम पर दया कर रहे हैं। हमें इस नये साल में अपने गुरु के प्रति सच्ची नम्रता और विश्वास पैदा करना चाहिए। अपने गुरु पर भरोसा सन्तमत के सफर के लिए एक मूल तत्व है अगर हमारे पास ये सब है तो हमें इस राह पर आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँः

तक्क लै मना ओऐ, कृपाल प्यारे ताईं, x 2

1 *दर्शन गुरु दा जिसने कीता,*
अमृत नाम प्याला पीता x 2
पक लै मना ओऐ, कृपाल सहारे ताईं
तक्क लै मना ओऐ.....

2 *जिसने वी दिल विच, गुरु नूं बिठा लया,*
गेड़ा चौरासी वाला मुका लया x 2
रख लै मना ओऐ, गुरु प्यार नजारे ताईं
तक्क लै मना ओऐ .....

3 *गुरु दा प्यार, जिस हृदय च आऐगा,*
सच्चखंड दा बूहा खुल जाऐगा x 2
रट लै मना ओऐ, सच्चे गुरु दे इशारे ताईं,
तक्क लै मना ओऐ .....

4 *दुखियां दे दुख, इक पल च निवार दा,*
ठलया ना जाऐ ओह समुंद्र प्यार दा x 2
दया जद होवे, इक पल विच तारे साईं,
तक्क लै मना ओऐ .....

5 *दस्सी ना कहानी जाऐ, गुरु दे प्यार दी,*
करां की सिफ़त मैं सच्चे दिलदार दी x 2
दस्स लै 'अजायब', कृपाल दे नजारे ताईं,
तक्क लै मना ओऐ .....

आपका प्यारा,

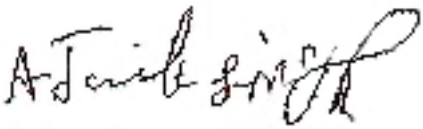

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–नौवां | जनवरी–2023

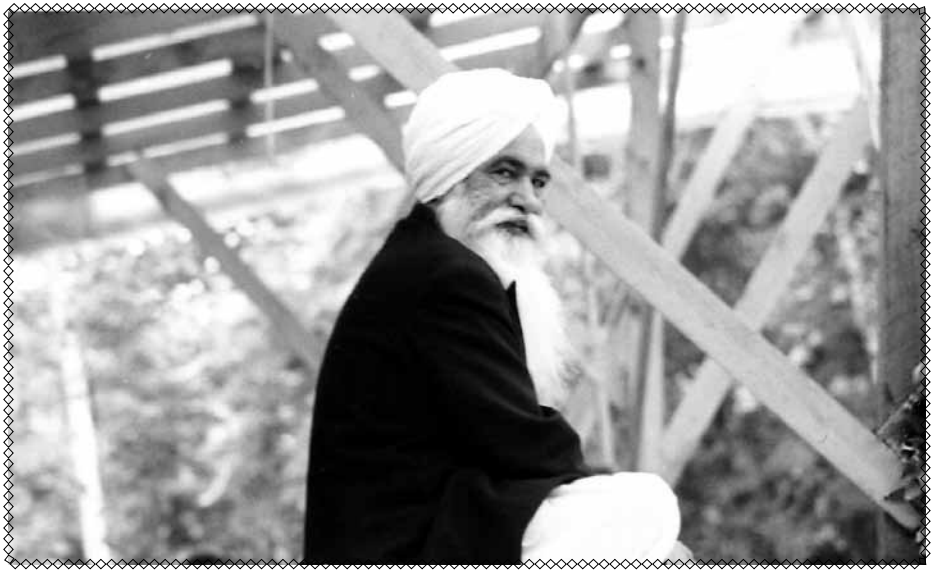

4 **नाम की दौलत**
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी

33 **नये भजन**
भजन माला–2022

25 **सूक्ष्म मंडल के देवी–देवता**
प्रेमियों के सवालों के जवाब

40 **धन्य अजायब**
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 250 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम की दौलत

गुरु रामदास जी की बानी 4 मार्च 1990 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव का धन्यवादी हूँ जो इस तपते हुए संसार में हम जीवों की खातिर बीमारियों का खोल लेकर, इंसान का जामा धारण करके आए। आपने इस गरीब के ऊपर बहुत दया की, नाम की बारिश की। इंसानी जामें को सफल करने के लिए हमें तीन–चार चीजों की जरूरत पड़ती है। सबसे पहले परमात्मा की दया कि परमात्मा ने हमें चौरासी लाख योनियों से ऊपर उठने के लिए इंसान का जामा दिया है। विषय–भोग, ईर्ष्या–लड़ाई और थोड़े बहुत सुख–दुख हमें उन जामों में भी मिलते आए हैं।

ऐसे भी कुत्ते हैं जो कारों पर चढ़ते हैं, अच्छे–अच्छे मकानों में रहते हैं जैसे मकान इंसानों को भी नसीब नहीं होते। हम ऐसे भी जानवर देखते हैं जो सड़कों पर मारे–मारे फिरते हैं, उन्हें खाने के लिए मैला भी नसीब नहीं होता। इसी तरह अगर हम इंसान के जामें में भी नजर डालें तो हमें सुखी इंसान भी मिलते हैं और ऐसे दुखी इंसान भी मिलते हैं जिनके पास शाम को पेट भरने के लिए भी कुछ नहीं होता। हर आत्मा बेसहारा है, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँचों डाकु इंसान, पशु–पक्षी सबको बंदर की तरह नचा रहे हैं। इस संघर्ष में कोई सूरमा बहादुर ही हमारी मदद कर सकता है।

प्रभु ने दया करके हमें इंसानी जामा दिया फिर उसने हमारे अंदर बैठकर यह प्रेरणा दी कि जिस तरह माता–पिता के बगैर बच्चे नहीं हो सकते। सर्फ–साबुन के बिना कपड़े साफ नहीं हो सकते, डोरी के बिना माला में मोती नहीं पिरो सकते उसी तरह अगर हमने इंसान के जामें को सफल करना है तो प्रभु से मिलना है। हमारी आत्मा परमात्मा से बिछुड़कर

इस संसार में आई है। परमात्मा खुद ही इंतजाम करके हमें किसी महात्मा के चरणों में लाता है, हमारी इच्छा शक्ति को बल बक्शता है तभी हम महात्मा की सोहबत–संगत में आते हैं।

सन्त–महात्मा जब देखते हैं कि यह सतसंग सुनता है, प्रेमी है तो वे हमें 'शब्द–नाम' का भेद दे देते हैं। जो इससे भी ज्यादा समझदार हैं वे अपने ऊपर दया करते हैं। भजन–सिमरन करना, अपने आपको बेहतर इंसान बनाना किसी के ऊपर अहसान करना नहीं है, इसमें हमारा अपना ही फायदा है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पालो, चौरासी का फेर बचालो

अगर आप चौरासी लाख के चक्कर से बचना चाहते हैं तो आप किसी ऐसे महात्मा की शरण मे जाएं जो अंदर जाता है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। परमात्मा हमारे जिस्म के अंदर है, जिस तरह दूध के अंदर घी होता है लेकिन यत्न के बिना हम घी नहीं निकाल सकते।

सतसंग शुरु करने से पहले मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँः एक राजा बहुत अच्छा था, उसका वजीर भी काफी काबिल था। रोज सवाल–जवाब चलते रहते थे, एक दिन रूहानियत का सवाल भी आया। राजा ने वजीर से कहा, ''हम कानून के जानकार है, बातचीत भी करते हैं तू मुझे अच्छी सलाह देता है जिसकी मैं कद्र करता हूँ लेकिन कुछ सवाल परमार्थ के भी हैं अगर तू मुझे उनके जवाब दे तभी ठीक है।''

राजा ने वजीर से पूछा कि परमात्मा कोई कारोबार भी करता है या खाली बैठा रहता है? कोई कहता है कि परमात्मा समुंद्र की तह के अंदर है, खीर के समुंद्र में है हाँलाकि किसी ने देखा नहीं यह सिर्फ कल्पना ही है। मुझे दुनिया के काफी समुंद्रो के ऊपर से जाना पड़ा है, टापुओं में जाने का मौका भी मिला है लेकिन मैंने इस धरती पर खीर या दही का समुंद्र नहीं देखा, यह सिर्फ ग्रंथकारों की कल्पना ही है। कोई कहता है

कि परमात्मा सोने के मंदिर में रहता है। कोई कहता है कि परमात्मा पहाड़ की चोटी पर है। लोग परमात्मा के आगे हर तरह का भोग रखते हैं। कोई अच्छा प्रसाद बनाकर कहता है कि फुल्लियों का प्रसाद अच्छा है और कोई कुछ तो कोई कुछ कहता है।

मैं आपको प्रसाद के मुतल्लिक ही बताऊँगा, मैं एक बार दिल्ली गया। वहाँ एक रईस सिक्ख मेरे पास आया। वह घर से तकरीबन दो–ढाई किलो बादाम, किशमिश और मिश्री लेकर मेरे पास आया। मैं बैठकर देख ही रहा था कि मैं इससे क्या कहूँ? उसने अपने आप ही कहा, ''हम जिन सन्तों के पास जाते हैं वे कहते हैं कि यही सबसे पवित्र प्रसाद है, यही प्रसाद भगवान को प्यारा है।'' मैंने उससे हँसकर कहा, ''इसका मतलब यह है कि उसने भगवान नहीं देखा, वह खुद स्वादु होगा। तू थोड़ा सा सोचकर देख यह प्रसाद कितने पैसों का आया है। खैर मालिक की मौज वह खामोश होकर चला गया।''

राजा ने वजीर से पूछा कि परमात्मा को कौन सा खाना पसंद है, वह कौन से प्रसाद का भोग लगाता है, वह कहाँ रहता है, वह कोई कारोबार भी करता है या खाली ही बैठा रहता है? वजीर इन सवालों के बारे में काफी गंभीरता से सोचता रहा अगर किसी किताब के कानून की बात होती तो वह बड़ी आसानी से उसी वक्त जवाब दे सकता था। यह सवाल बहुत उलझा हुआ था, परमार्थ की बात थी जिसके बारे में वजीर ने सुना भी नहीं था तो हल क्या करना था।

वजीर की लड़की आम साधु–सन्तों की संगत में जाती थी, किसी महात्मा की नामलेवा थी। वजीर के दिल में ख्याल आया कि हो सकता है मेरी लड़की मुझे किसी रास्ते पर डाल दे ताकि मैं राजा की नजर में जैसा अभी हूँ वैसा ही रहूँ। वजीर ने अपनी लड़की को वही सवाल बताए। लड़की ने कहा, ''आप बेफिक्र हो जाएं और राजा से कह दें कि इन सवालों

के जवाब तो मेरी छोटी सी लड़की भी बता सकती है। अगर आप इससे ऊँचे सवाल पूछते तो मैं आपको बताता। ये तो बच्चों के सवाल हैं। आप मेरी लड़की को बुला लें वह आपको जवाब दे देगी।'' राजा ने लड़की को बुलाया तो लड़की बहुत प्यार से दरबार में हाजिर हुई।

जो अंदर जाता है उसे इसका ज्ञान होता है कि परमात्मा क्या खाता है, कहाँ रहता है, क्या कारोबार करता है, वह परमात्मा की कारगुजारी को हमेशा ही देखता है। लड़की ने राजा से कहा, ''आप दूध मँगवाएं।'' राजा के हुक्म से दूध आ गया तो लड़की ने कहा, ''आपको इसके अंदर घी नजर आ रहा है?'' राजा ने कहा, ''नहीं।'' लड़की ने कहा, ''दूध को गरम करके जामन दें फिर इसे बिलोएं तो इसके अंदर से घी निकलेगा।''

हम लोग ऐसी आम साधारण बात को जानते हैं लेकिन इसकी तरफ हम तवज्जो नहीं देते इसी तरह परमात्मा शरीर के अंदर है। परमात्मा न समुंद्र में है न किसी पहाड़ की चोटी पर है। जिस तरह दूध के अंदर घी समाया हुआ है, फूल के अंदर महक समाई हुई है इसी तरह परमात्मा हमारे अंदर समाया हुआ है। जिन्होंने यह घी निकाला है उनकी मदद लेनी पड़ती है। लड़की का जवाब सुनकर राजा बहुत खुश हुआ।

फिर राजा ने कहा कि कोई परमात्मा को पूर्व की तरफ कहता है, कोई पश्चिम, कोई उत्तर और कोई दक्षिण की तरफ कहता है। बहुत सारी कौमें पश्चिम की तरफ मुँह करके नमस्कार करती हैं। लड़की ने कहा, ''आप जलता हुआ दीपक मँगवाएं, मैं बता दूँगी।'' दीपक लाया गया। लड़की ने कहा, ''आप गौर से देखें कि दीपक के किस तरफ प्रकाश है?'' राजा ने बहुत जल्दी से कहा कि दीपक के चारों तरफ प्रकाश है। लड़की ने कहा, ''आप गौर से देखें क्या प्रकाश सब तरफ है?'' राजा ने कहा, ''हाँ, चारों तरफ प्रकाश है।'' लड़की ने कहा, ''आप दीपक के नीचे की तरफ देखें।'' राजा ने कहा, ''हाँ, नीचे की तरफ अंधेरा है।'' लड़की ने

कहा, ''प्रभु की ज्योति सारी दुनिया को प्रकाश दे रही है, आधार दे रही है। आगे–पीछे, ऊपर–नीचे कोई भी ऐसी जगह नहीं जहाँ उसका प्रकाश नहीं पहुँचता। प्रकाश हर जिस्म में पहुँचता है इसलिए परमात्मा हर घट के अंदर है। परमात्मा के रहने का कोई खास ठिकाना नहीं। हर एक इंसान, पशु–पक्षी के अंदर वही ज्योत काम कर रही है।

फिर राजा ने पूछा, ''परमात्मा कौन सा प्रसाद खाता है?'' लड़की ने कहा, ''अपने दस नाखूनों से कमाया हुआ भोजन ही पवित्र होता है, प्रभु उसी को परवान करता है। ऐसा नहीं कि हम ठग्गी मारकर या चोरी करके लाएं और उसका प्रसाद बनाकर प्रभु के आगे रख दें वह उसे खा लेगा।'' बुल्लेशाह प्यार से कहते हैंः

आरन दियां चोरियां सूई करदे दान
कोठे चढ़कर देखदे औंदे कदो बवान

धन को अच्छी तरफ लगा देना ठीक है। सबसे पहले दस नाखूनों से मेहनत करें, प्रभु उस भोजन को खाकर खुश होता है।

फिर राजा ने पूछा, ''परमात्मा क्या कारोबार करता है?'' लड़की आला पात्र थी उसने राजा से कहा, ''आप मुझसे यह प्रश्न शिष्य बनकर पूछ रहे हैं या राजा की हैसियत से पूछ रहे हैं?'' राजा भी आला पात्र था, उसने सोचा अगर मैं यह कहूँगा कि मैं राजा हूँ तो लड़की कहेगी कि मुझे यहाँ क्यों बुलाया है? आप खुद यह सवाल हल नहीं कर सके। राजा ने कहा, ''बेटी, मैं शिष्य की हैसियत से पूछ रहा हूँ?'' लड़की ने कहा, ''आप अब तख्त छोड़कर नीचे बैठ जाएं।'' राजा नीचे बैठ गया। लड़की ने कहा, ''अब आपको सवाल का जवाब समझ आ गया?'' राजा ने कहा, ''अभी समझ नहीं आया।'' लड़की ने कहा, ''पहले आप बादशाह थे, अब मैं बादशाह हूँ। परमात्मा ऐसे भी रंग करता है कि साहूकारों को गरीब बनाने में ज्यादा देर नहीं लगाता और गरीबों को अमीर बना देता है।'' गुरु नानकदेव जी ने बानी में लिखा हैः

नदर उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा, दर मंगन भिख न पाइदा

जब परमात्मा आँखे फेर लेता है तो कोई भिक्षा भी नहीं देता। इस तरह लड़की ने राजा के सारे सवालों का जवाब दे दिया। आपके आगे गुरु रामदास जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है।

गुरु रामदास जी महाराज बहुत ही पवित्र आत्मा थे, मालिक के प्यारों की जितनी भी महिमा गाई जाए वह कम होती है। रामदास जी की शादी गुरु अमरदेव की लड़की के साथ हुई थी। पिछले जमाने में एक बहुत अच्छी रीत थी लेकिन आज हमने इस रीत को नाक का सवाल बना लिया है। उस समय लोग लड़की की शादी में थोड़ा–बहुत सामान देते थे लेकिन लड़के वाले लड़की लेकर ही संतुष्ट होते थे। इसके बाद जो कुछ था उसे लालच समझते थे लेकिन आज लड़की वालों के लिए कितनी मुसीबत है, लालचवश होकर समस्या खड़ी की हुई है, हम पशु की तरह अपने बच्चे का मोल करते हैं।

गुरु अमरदेव जी महाराज ने अपनी लड़की बीबी भानी की शादी करके रामदास जी से कहा, ''भल्लों में यह रीत है कि लड़की देकर थोड़ा बहुत तोहफा भी देते हैं। बेटा, तू क्या तोहफा चाहता है?'' गुरु रामदास जी महाराज पहले ही पहचान चुके थे कि इंसान के जामें में कौन छिपा हुआ है? रामदास जी ने कहा, ''मुझे **नाम की दौलत** दे दें इससे बड़ा कोई दान नहीं, तोहफा नहीं।''

गुरु रामदास जी ने सारी जिंदगी गुरु अमरदेव जी को दुनियावी ससुर नहीं समझा, कुलमालिक जानकर तन–मन से गुरु अमरदेव जी की सेवा की। उन्होंने जो हुक्म दिया उसे ज्यादा से ज्यादा माना। गुरु रामदास जी की बानी पढ़ने से पता लगता है कि उनके अंदर कितना गुरु प्यार था, वे गुरु के ऊपर कितनी श्रद्धा रखते थे। उनका शब्द गौर से सुनने वाला है, आप बहुत अधीन होकर कहते हैं:

राम गुरु पारस परस करीजै।

हे राम, हे प्रभु, हे भगवान, अकाल पुरख, तू हमें ऐसा गुरु मिला जिसके साथ मिलकर हम भी भगवान रूप हो जाएं। दया करके हमें वह पारस दे। बुजुर्गों से सुनते हैं अगर पारस को लोहे के साथ लगा दें तो वह लोहा, सोना बन सकता है लेकिन पारस नहीं बन सकता। कबीर साहब कहते हैं, ''सन्त में यह खूबी होती है कि सन्त जिसे अपने नाम का पारस लगा देते हैं, उसे अपने जैसा सन्त बना लेते हैं। बेशक लोहा कितना भी बेकार हो जब वह पारस से छू जाता है तो सोना बन जाता है।

हम चाहे कितने भी बुरे जीव हों, सन्त जिसके अंदर नाम की कणी रख देते हैं वह देर–सवेर सन्त पदवी को प्राप्त कर लेता है। अगर जीव आसान तरीके से न लगे तो ठोकर खाकर इस तरफ आ जाता है। मैंने ऐसे बहुत आदमी देखे हैं जो ठोकरें खाकर इस तरफ लग जाते हैं। महाराज कृपाल कहते थे, ''सतगुरु हाथ से डोर नहीं छोड़ता ढीली जरूर कर देता है।'' गुरु बहुत समझदारी से नाम देता है, वह नाम देते हुए कभी धोखा नहीं खाता। गुरु की जिम्मेदारी होती है, वह बहुत भरोसे वाला होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो, मैं जट गुरु हूँ, मैं बाहर आपका आदर–मान करता हूँ लेकिन सन्त अंदर से इतने नरम नहीं होते। आपका भी धर्म बनता है कि आप नाम की कमाई करें, बुराई को छोड़ें, बुराई का मुँह सदा ही गिरावट की तरफ होता है। एक बुरा ख्याल हमें सच्चखंड से नीचे ले आता है। हमें हमेशा अपने अंदर अच्छे ख्याल पैदा करने चाहिए।'' गुरु रामदास जी का शब्द गौर से सुनें:

राम गुर पारस परस करीजै, राम गुर पारस परस करीजै।
हम निरगुणी मनूर अति फीके मिल सतगुर पारस कीजै।।

आप कहते हैं, ''हम तो गुणों से रहित थे लोहे की मैल से भी बुरे थे, लोहे की मैल को मनूर कहते हैं। यह हमारे गुरुओं की दया हुई जिन्होंने हमारी आत्मा को नाम का पारस छुआया और यह भी गुणों वाली हो गई।

कबीर पारस क्या करे जे लोहा खोटा होय

अगर लोहा ही खोटा है तो इसमें पारस का क्या कसूर है, गुरु का क्या कसूर है? कबीर साहब कहते हैंः

कबीर साचा सतगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक
अँधे एक न लागई जिउ बाँस बजाईऐ फूक

सतसंग का यही फायदा है कि हमने अपने ऐबों की तरफ देखना है और ऐबों को छोड़कर बेहतर बनना है। जिस तरह सोने–चाँदी के गहने साँचे में ढाले जाते हैं, ईंट बनाने के लिए मिट्टी के गारे को एक साँचे में ढाला जाता है। ऐसा नहीं कि सतसंग सुना और कपड़े झाड़कर घर चले आए तो सतसंग में जाने का क्या फायदा हुआ। महात्मा हमारे लिए कितनी तकलीफ़ उठाते हैं।

पलटू साहब कहते हैं कि महात्मा को धन–दौलत की चाह नहीं होती, उनके सारे काम उनका गुरु करता है, वे हमारे मुफ्त के नौकर हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि महात्मा के कहने पर चलें। हमारे लिए दो ही ताकतें हैं एक गुरु और दूसरा राम भगवान, ये दोनों एक ही ताकत हैं सिर्फ तत्व अलग–अलग हैं। देह में बैठकर बयान किया जाता है अगर देह न हो तो हमें कौन समझाए? कबीर साहब कहते हैं, ''ब्रह्म भी काया का सहारा लेकर ही बोलता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

सतगुरु को मानुख का रूप न जान।

इंसान के जामें में तो गुरु समझाने–बुझाने के लिए ही आता है। जिन आत्माओं के लिए हुक्म होता है, गुरु देह में बैठकर उन्हें **नाम की दौलत** दे देते हैं। न शिष्य की देह ने रहना है न सन्तों की देह ने रहना है, इस दुनिया का मसाला यहीं रह जाएगा। हमारी आत्मा अमर है और वह प्रभु भी अमर है, उसे न तलवार काट सकती है न आग जला सकती है, उसे

कोई खत्म नहीं कर सकता। बेशक सब लोग यही समझते हैं कि ब्रह्म ही उत्पत्ति और लय करने वाला है लेकिन सन्त संसार में आकर इस पर्दे को उठाते हैं कि प्रभु सच्चखंड में बैठा है। सच्चखंड से नीचे जितने भी मंडल हैं इन्हें प्रभु ने खुद बनाकर, इनका इंतजाम काल के हवाले किया हुआ है।

निचले मंडलों में ब्रह्म या काल नई आत्मा को न तो पैदा कर सकता है और न ही पहली आत्मा को खत्म कर सकता है। यह आत्मा को तन–मन के पिंजरे में कैद रखता है, गले में कर्मों का झंझट डालता है जो कभी खत्म होने में नहीं आता। इसलिए आप गुरु की महिमा करते हैं कि हे प्रभु, हम गुरु और राम के बीच फर्क नहीं समझते, हमारे लिए दोनों एक ही जोत हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''मैं गुरु को करोड़ बार दंडवत प्रणाम करता हूँ, कीड़ा भृंग को नहीं जानता लेकिन भृंग उसे अपने जैसा बना लेता है।''

सुरग मुकत बैकुंठ सभ बांछेंह् नित आसा आस करीजै।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि हम दुनिया के जीव स्वर्ग की आशा लगाकर बैठे हैं, कोई नरक से डरकर सहमा बैठा है लेकिन महात्मा की बानी में न नरक का डर दिया जाता है और न स्वर्ग का लालच दिया जाता है। महात्मा हमें न रोचक विद्या सिखाते हैं और न भयानक विद्या सिखाते हैं, उनकी विद्या यथार्थ होती है। वे हमारे अंदर प्रभु से मिलने का शौक–विरह पैदा करते हैं। दुनिया के लोग स्वर्ग और बैकुंठ की आशा रखते हैं लेकिन प्रभु के प्यारे स्वर्ग की चाहत नहीं रखते, मुक्ति की चाहत नहीं रखते। वे प्रभु का मिलाप ही अपनी आँखों के आगे रखते हैं कि हे प्रभु, तेरी ही जरूरत है। कबीर साहब कहते हैंः

क्या नर्क क्या स्वर्ग सन्तन दोऊ रादे
हम काहू की कान न कडदे अपने गुर प्रसादे

हमारे ऊपर गुरुओं की कृपा हो गई, हम स्वर्ग की चाहत नहीं रखते। महात्मा सतसंग में बताते हैं कि वे लोग खुशकिस्मत हैं जो अंदर जाकर

खुद अपनी आँखों से देखते हैं कि वह क्या चीज है। काल ने जीवों को इनाम और दण्ड दिया हुआ है। जो उसके मंडल में रहकर नेक कर्म करता है काल उन्हें स्वर्ग देता है। जिस तरह स्वर्ग मंडल है उसी तरह नरक मंडल, इन्द्र पुरी और ब्रह्म पुरी है। ये सारे मंडल काल के अधीन हैं, एक दिन इनका नाश हो जाता है। स्वर्ग में भी भोग योनियाँ हैं, उम्रें जरूर लम्बी हैं।

हमारे माता–पिता भी इन्द्र देवता की कहानी सुनाते रहे हैं। स्वर्ग के राजा इन्द्र देवता ने अपने काम की तपिश को मिटाने के लिए गौतम ऋषि का तन धारण करके उसके घर जाकर बुराई की, ऋषि की पत्नी का सत भंग किया, आखिर ऋषि से श्राप लिया। हम और भी किसी देवता के आगे हर महीने नमस्कार करते हैं अगर उनके बारे में जानकारी लें तो उन्हें देवता कह ही नहीं सकते कि वे देवता थे या कोई और ताकत रखते थे। वहाँ भी भोग योनियों में मौत–पैदाईश और ईर्ष्या है। कबीर साहब कहते हैंः

दिनस न रैन बेद नहीं सासत्र तहाँ बसै निरंकारा
कहे कबीर नर तिसे धिआवहु बावरिआ संसारा

सच्चखंड ऐसा देश है जहाँ दिन–रात, मौत–पैदाईश, वेद–शास्त्र नहीं। वहाँ तो प्यार, शान्ति, खामोशी है। मैं और तू उस देश की भाषा नहीं। हम न तो स्वर्ग की आशा रखते हैं, न नरक से डरते हैं। हमारे दिल में प्रभु के मिलाप और गुरु की भक्ति की ही चाहत है।

हर दरसन के जन मुकत न मांगेंह् मिल दरसन तृपत मन धीजै।।

मालिक के प्यारे दुनिया के पदार्थों और हुकूमत में सुख–चैन महसूस नहीं करते। उनके मन में प्रभु के दर्शनों की चाहत है।

माया मोह सबल है भारी मोह कालख दाग लगीजै।।

अब गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि चाहे कोई कितना भी समझदार क्यों न हो अगर वह काजल की कोठरी में जाएगा तो वह दाग लगे बिना रह नहीं सकता। इसी तरह यह दुनिया माया के पदार्थों की है

यह सबको दागी कर देती है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों ने तप–अभ्यास किए आखिर हड्डियों के ढेर हो गए। आप इतिहास पढ़कर देखें, जिन ऋषियों ने अट्ठासी–अट्ठासी हजार वर्ष तप किया काल ने उन्हें भी बंदर की तरह नचाया। जो भी इस माया की दुनिया में आता है वह दागी होकर जाता है।

कबीर साहब कहते हैं, ''जो दाना चक्की की कील का सहारा ले लेता है वह दाना साबुत बच जाता है। वह कील नाम है जो उस नाम का आसरा ले लेता है वह बच जाता है बाकी हम दागी होकर चले जाते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाया करते थे कि महात्मा का जीवन उस मक्खी की तरह होता है जो शहद के किनारे आकर बैठ जाती है, वह शहद खा जाती है और खुष्क परों से उड़ जाती है। जिस तरह मुरगावी के ऊपर पानी का असर नहीं होता उसी तरह महात्मा के ऊपर दुनिया का कोई असर नहीं होता, वे दुनिया में रहते हुए मालिक के साथ जुड़े रहते हैं। हम दुनियादार जीव उस मक्खी की तरह हैं जो शहद के बीच आकर बैठ जाती है, उसके पर शहद में चिपक जाते हैं। वह पर निकालती है तो उसकी टाँग शहद में चिपक जाती है। वह न शहद खा सकती है और न उड़ ही सकती है। हमारी भी यही हालत है कि हम दुनिया के पदार्थों में लगकर प्रभु को भुलाए बैठे हैं।

हमारे सतगुरु एक मिसाल देकर समझाया करते थे कि यह दुनिया एक नुमाईश है। छोटा बच्चा पिता के साथ नुमाईश में जाता है, वह अपने पिता की अंगुली पकड़कर रखता है तो उसे नुमाईश में बहुत खुशी मिलती है अगर उसकी अंगुली पिता के हाथ से छूट जाती है, नुमाईश में तो सब सामान होता है लेकिन वह रोता–चिल्लाता है कि पता नहीं अब मैं अपने पिता से मिलूँगा या नहीं। आपने देखा होगा कि इस तरह मेले में जो बच्चे खो जाते हैं वे कितने परेशान होते हैं। हाँलाकि समाज सेवक उनका दिल भी बहलाते हैं लेकिन बच्चा माता–पिता के बिना चैन ही नहीं ले सकता।

इसी तरह मालिक के प्यारे इस संसार में आते हैं, वे अपने पिता परमात्मा गुरुदेव की अंगुली पकड़कर रखते हैं। वे संसार की नुमाईश को अच्छी तरह देख लेते हैं। वे खुशी भी मनाते हैं और इस संसार की असलियत को भी समझते हैं लेकिन हम लोग प्रभु का आसरा, प्रभु की अंगुली छोड़ देते हैं और दुनिया के पदार्थों में सुख ढूंढते हैं। आज तक इनमें किसी को सुख नहीं मिला और न मिल ही सकता है।

सब महात्माओं ने इस दुनिया को दुखों की नगरी कहकर बयान किया है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु भी सुखी नहीं रहे। बड़े–बड़े देवताओं की कहानियाँ पढ़कर देख लें वे सब इन बागों में आकर कितने परेशान रहे। नाम का सहारा लेने वाला ही बचता है। यह नाम हिन्दी या पंजाबी में नहीं, यह बिना लिखी और बिना बोलने वाली भाषा है। यह बिना लिखा कानून है। दुनिया के पदार्थों में आकर सारी दुनिया दागी होकर चली जाती है।

मेरे ठाकुर के जन अलिपत हैं मुकते ज्यों मुरगाई पंक न भीजै।।

आप बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं जिस तरह मुरगावी पानी में रहती है, खाती–पीती है लेकिन जब उड़ती है खुष्क परों से ही उड़ जाती है। इसी तरह मालिक के प्यारे यह नहीं कहते कि आप माया को त्याग दें या आपको कर्मों के मुताबिक जो जायदाद मिली है इसे त्यागकर जंगलों–पहाड़ो में छिप जाएं। प्रभु ने हमें जो पदार्थ इस्तेमाल करने के लिए दिए हैं, आप इनसे काम लें लेकिन इन्हें अपना शासक न बनाएं।

चंदन वास भुयंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदन लीजै।।
काढ खड़ग गुर गआन करारा बिख छेद छेद रस पीजै।।

चंदन सबसे ठंडी लकड़ी होती है। जब साँपों को जहर की तपिश चढ़ती है तो वे व्याकुल हो जाते हैं और ठंड प्राप्त करने के लिए चंदन की लकड़ी से लिपट जाते हैं। ये साँप चंदन की लकड़ी के वारिस ही बन जाते हैं अगर किसी को चंदन की जरूरत है तो उसे सबसे पहले यह

सोचना पड़ेगा कि कोई ऐसा हथियार मिले जिससे इन साँपों को काटा जाए ताकि आसानी से चंदन प्राप्त किया जा सके। बंदे को खत्म करने के लिए जहरीले साँप की एक फुंकार ही काफी होती है।

इसी तरह प्रभु बहुत ठंडा है। नाम में बहुत शान्ति है लेकिन उसके दरवाजे पर मन ने पहरा दिया हुआ है, मन साँप की तरह बैठा हुआ है। अगर हम ठंड प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले वह खड़ग लेनी पड़ेगी। ब्रह्मानंद ने कहा थाः

ज्ञान खड़ग देकर कर मांही, सबको मार भगावै रे।

गुरु हमें नाम की खड़ग देते हैं, हम उस खड़ग से साँप को काटकर चंदन प्राप्त कर सकते हैं। हमारी आत्मा और प्रभु के दरमियान मन रूपी साँप बैठा है, मन रूपी दीवार बनी हुई है। गुरु का दिया हुआ नाम खड़ग का काम करता है। हमारी आत्मा के ऊपर स्थूल पर्दा है, इसके अंदर सूक्ष्म है, इसके अंदर कारण है। स्थूल दुनिया में स्थूल साँप हमारा मन है। सूक्ष्म में सूक्ष्म मन है, सूक्ष्म भोग हैं। कारण में जाते हैं तो वहाँ कारण मन है। महात्मा सबसे पहले हमें साधन बताते हैं कि आपने नाम कैसे हासिल करना है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

नाम रहे चौथे पद माहीं तू ढूढें त्रिलोकी माहीं।

आप कहते हैं कि नाम सच्चखंड में हैं, नीचे के सारे मंडल नाम ने पैदा किए हैं। आप फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाएं, इसे जीवित मरना कहते हैं। अगर शरीर नीचे से थोड़ा बहुत सुन्न होता है तो हम घबराकर उठ जाते हैं फिर अभ्यास पर नहीं बैठते, शिकायत करते हैं कि मैंने तो मर ही जाना था।

महात्मा कहते हैं, ''नाम जपने से न कोई मरा है और न मर ही सकता है। हमारा मन और तकलीफें सह लेता है लेकिन जब हम इस तरफ आते हैं तो थोड़ा सा सुन्न होने पर नाम जपना छोड़ देते हैं।''

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि जब तक हम अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे नहीं लाते, जिस तरह सचमुच आदमी मरता है उसी तरह पहले हमारे गिट्टे–टाँगे, धड़ सो जाता है। नीचे गुदा चक्र से लेकर ऊपर आज्ञा चक्र तक आते हैं तो सचमुच यही लगता है कि अब हम नहीं बचेंगे लेकिन एक बहादुर सिपाही की तरह सामना करना पड़ता है। गुरु का आसरा है तो सिमरन करने से ये सारी तकलीफें समाप्त हो जाती हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सिमरन के जरिए हम आत्मा को शरीर से इस तरह निकाल सकते हैं जैसे मक्खन से बाल निकालते हैं। सिमरन तकलीफ नहीं आने देता।'' महाराज कृपाल मिसाल दिया करते थे, ''जिस तरह रेशम का कपड़ा झाड़ी पर पड़ा है अगर हम उस कपड़े को धीरे–धीरे निकालेंगे तो वह कपड़ा बच जाएगा।''

इसी तरह हमारी आत्मा दुनिया में बेटे–बेटियों के अलावा कौम–मुल्क और मजहब के झगड़ों में फैली हुई है। इसे शरीर से ऊपर उठने में थोड़ी तकलीफ होती है लेकिन सिमरन इस तरह का काम करता है जिस तरह हम आहिस्ता–आहिस्ता रेशम के कपड़े को झाड़ियों में से निकाल लेते हैं। पता ही नहीं लगता कि हमारी आत्मा किस तरह शरीर से ऊपर गई। हमारे दिल कमजोर हैं लेकिन हम उन रब के प्यारो की रीस करना चाहते हैं।

आप कहते हैं कि सबसे पहले आप अपने मन को ऊपर लाएं, इसे बे हरकत कर दें ताकि इसे तीसरे तिल पर टिकने की आदत पड़ जाए। महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते, नाम का पदार्थ जोत रूप, नाद रूप होकर हम सबके अंदर बैठा है, पहले दिन हमारे कर्मों के मुताबिक थोड़ी बहुत पूँजी जरूर मिलती है। उस पूँजी को बढ़ाना हमारा काम है नहीं तो जितनी पूँजी हमें मिली है हम उसे खो नहीं सकते।

आप प्यार से कहते हैं अगर आप उस प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो गुरु के दिए हुए नाम को प्यार से जपें। ऐसा नहीं कि जिस महात्मा ने हमें नाम दिया है वह बेफिक्र होकर बैठा है। जो सेवक अपनी ड्यूटी निभाता है वह आकर कोई शिकायत नहीं करता कि मुझे कोई समस्या है। ज्यादातर वही लोग समस्याएं खड़ी करते हैं जो भजन–सिमरन नहीं करते और कहते हैं कि हमारा मन नहीं लगता, शरीर दुखता है।

अगर हम डाक्टर से दवाई लाकर उसे अलमारी में रख दें, उसे न खाएं तो वह दवाई क्या फायदा करेगी? नाम जपकर ही पता लगता है कि नाम कितना मीठा है, कितना शान्त है। महात्मा ने आपको शब्द के साथ लैस किया है, महात्मा ने हमें नाम की जो खड़ग दी है उसे जपते हैं तो मन अपने आप ही बे हरकत हो जाता है, टिक जाता है।

आन आन समधा बहु कीनी पल बैसंतर भसम करीजै।।

अगर लकड़ियों के ढेर को आग की थोड़ी सी चिंगारी लगा दें तो वह सारे ढेर को राख कर देती है।

महा उग्र पाप साकत नर कीने मिल साधु लूकी दीजै।।

चाहे हम कितने भी पाप कर चुके हैं फिर भी हमें हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए, हमें प्रभु की दया जरूर प्राप्त करनी चाहिए। आप किसी ऐसे महात्मा से मिलें जो आपको नाम का पलीता दे दे। पिछले जमाने में तोपें चलाने वाले रस्सी को आग लगा लेते थे, रस्सी बहुत देर तक जलती रहती थी, उसे पलीता कहते हैं। तोप के आगे बारूद लगाया जाता था और पीछे पलीता लगा देते थे, तोप चल जाती थी। आज तकनीकी युग है, तोपों के अंदर बारूद फिट किया जाता है पीछे से ट्रेगर की धमक मिलती है फौरन आगे उसका पटाखा बज जाता है। नाम पलीते का काम करेगा, वह आपके सारे पाप नाश कर देगा। कबीर साहब कहते हैंः

जद ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश, मानो चिड़गी आग की बड़ी पुरानी घास

शर्त यह होती है कि आप जो कुछ पहले कर चुके हैं, अब वहीं खड़े हो जाएं। ऐसा नहीं कि नाम भी ले आए फिर भी हमारे अंदर वही बुरे ख्याल हैं। सोचकर देखें इसमें नाम का या महात्मा का क्या कसूर है? हमें तौबा कर लेनी चाहिए उसके बाद हमें पाप की तरफ सोचना भी नहीं चाहिए।

साधु साध साध जन नीके जिन अंतर नाम धरीजै।।
निपरस परस भए साधु जन जन हर भगवान दिखीजै।।

आप कहते हैं कि रंगे हुए कपड़े पहनने वाले को या घर–बार छोड़ने वाले को साधु नहीं कहते। साध वह है जो साधना करके दसवें द्वार में पहुँच गया है, दसवें द्वार में पहुँचकर साधु बनता है। जिस तरह एम. ए., बी. ए. की डिग्री होती है उसी तरह साधुओं की भी डिग्रियाँ होती हैं। शिष्य जब नौं द्वारों में से ख्याल को निकालकर सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके अंदर जोत तक पहुँच जाता है तब वह पूरा शिष्य बन जाता है।

शिष्य बनना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं अगर ऐसा शिष्य मिले तो हम उसे नमस्कार करने के लिए तैयार हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा था, ''वही शिष्य है, वही खालसा है जिसके अंदर नाम की ज्योत, शब्द की जोत प्रकट हो जाती है।'' जो सच्चखंड पहुँच जाता है वह परम सन्त बन जाता है। ऐसे साधुओं से मिलें जो साधना करके अंदर गए हैं, वे पापों को खत्म करके नाम की चिंगारी दे सकते हैं।

साकत सूत बहु गुरझी भरया क्योंकर तान तनीजै।।
तंत सूत किछ निकसै नाहीं साकत संग न कीजै।।

आपने पहले बताया था कि सदा ही साधुओं की संगत में जाना चाहिए। हमारे पापों को महात्मा की संगत ही काटती है। साकत उन्हें कहा गया है जिनका दिल काले कंबल की तरह होता है, वे प्रभु के उपकार को नहीं समझते। प्रभु ने उन्हें तन दिया है, रहने के लिए धरती दी है,

पीने के लिए पानी दिया है लेकिन वे परमात्मा को ही छोड़ जाते हैं कि हमें परमात्मा की क्या जरूरत है? हम जाने हमारा काम जाने। क्या हमें ऐसे लोगों की संगत करनी चाहिए, कभी उलझे सूत में से ताना बुना जा सकता है? आप ऐसे लोगों की संगत में न जाएं कहीं वे आपको भी प्रभु की भक्ति की तरफ से हटा दें।

अच्छी संगत का असर अच्छा होता है और बुरी संगत का असर बुरा होता है। जुआ खेलने वालों के पास बैठेंगे तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी। नशा करने वालों के पास बैठेंगे तो नशा करने की आदत पड़ जाएगी। इसी तरह अगर हम नाम जपने वालों की संगत में जाएंगे, एक सतसंग नहीं तो दूसरे सतसंग में समझ जाएंगे, आखिर उस रास्ते पर आ ही जाएंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

सतसंगत कैसी जाणिऐ जित्थे एको नाम वखणिऐ
वडभागी हर संगत पावे भागहीन भ्रम चोटां खावे

कहने का भाव यह है कि बुरी संगत हमारे परमार्थ की जिंदगी को बिगाड़ती है, अच्छी संगत बचाती है। सतसंग में नाम की महिमा, प्रभु की महिमा होती है। महात्मा उसे सतसंग नहीं कहते जहाँ एक मजहब दूसरे मजहब को गालियाँ निकालता हो या वहाँ परमात्मा से दूर करने का प्रचार किया जाता हो। महात्मा के सतसंग में किसी की निन्दा नहीं होती। तुलसीदास गौसाईं जी तो यह कहते हैंः

गुरु निंदक नारायण होई ताँके मुख न लग्गो कोई

अगर आपको गुरु की निन्दा करने वाला नारायण भी मिलता है तो आप वहाँ से किनारा कर जाएं। महात्मा की निन्दा करना बड़े से बड़ा पाप है। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैंः

निन्दा भली किसै की नाहीं मनमुख मुग्ध करन
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''पापी की निन्दा करना भी बुरा है क्योंकि निन्दा करने से हमारा अच्छा कर्म, भजन–सिमरन उसके खाते में जमा हो जाएगा अगर कोई घाटेमंद सौदा है तो वह निन्दा है। अगर हम किसी कमाई वाले महात्मा की निन्दा करते हैं तो हम अपने परमार्थ की जड़ ही काट रहे होते हैं।''

सतगुर साध संगत है नीकी मिल संगत राम रवीजै।।
अंतर रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै।।

महात्मा की संगत ही करने योग्य है। हम सबके शरीर के अंदर नाम का रतन है। संसार में चाहे कितनी भी चोटी के महात्मा आए सबको गुरु की शरण में जाकर नाम की प्राप्ति करनी पड़ी। कबीर साहब कहते हैंः

राम कृष्ण से को बड़ो, तिन्हू की गुर कीन्ह
तीन लोक के नेह का, गुरु अग्गे आधीन

राम, कृष्ण ब्रह्म के अवतार थे लेकिन उन्हें भी यह मर्यादा धारण करनी पड़ी। हम कहानियाँ पढ़ते हैं कि रामचन्द्र जी अपने गुरु वशिष्ट का आदर–मान करते रहे इसी तरह कृष्ण भगवान भी अपने गुरुदेव दुर्वासा ऋषि का आदर–मान करते रहे। यह मर्यादा प्रभु ने खुद ही बनाई हुई है।

जिस का गृह तिन दीआ ताला कुंजी गुरु सौंपाई
अनिक उपाव करे नही पावै बिन सतगुरु सरणाई

आप मन–बुद्धि से चाहे कितने भी उपाय कर लें लेकिन प्रभु ने ताला लगाकर उसकी चाबी महात्मा के हवाले की है। यह ताला किसी इंसान का लगाया हुआ नहीं है, इंसान इसे खोल भी नहीं सकता। वह प्रभु खुद ही पाँच तत्व का चोला पहनकर ताला खोलने के लिए संसार में आता है।

मेरा ठाकुर वडा वडा है सुआमी हम क्योंकर मिलेंह् मिलीजै।।

अब गुरु रामदास जी सवाल करते हैं कि वह प्रभु सबसे बड़ा है, ऊपर के मंडल सच्चखंड में बैठा है, वह मौत–पैदाईश के बंधन में नहीं

आता। वहाँ प्रलय–महाप्रलय भी नहीं जाती। वह हमारी आत्मा का स्वामी है, हमारी आत्मा का परमात्मा है। हम उस परमात्मा से कैसे मिल सकते हैं? आगे फिर आप जवाब भी देते हैं।

नानक मेल मिलाए गुर पूरा जन कौ पूरन दीजै।।

गुरु ही परमात्मा से मिला सकता है अगर गुरु दया करके हमें नाम का भेद दे दे। हम गुरु की कृपा के बिना परमात्मा से मिल ही नहीं सकते। मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहूँगाः

एक राजा की एक कन्या थी। उसने कन्या की शादी के लिए एक शर्त रख दी कि मैं शहर में ही छिप जाऊंगा, शाम होने से पहले जो मुझे ढूंढ लेगा मैं उससे अपनी कन्या की शादी कर दूँगा और उसे अपना राज्य भी दे दूँगा। जब यह मुनियादी करवाई गई तो समाज का हर जवान आदमी वहाँ आया कि लड़की मिलेगी और तख्त–ताज भी मिलेगा।

राजा बहुत आला पात्र था, वह भेष बदलकर एक बाग में जाकर छिप गया। राजा ने जगह–जगह मुजरा लगवा दिया। कहीं माया के ढेर रख दिए। किसी जगह राग–रंग लगवा दिए। किसी जगह अच्छे से अच्छा खाना लगवा दिया। उस सड़क पर राजा ने हर किस्म के पदार्थ लगवा दिए।

कमजोर दिल के लोगों ने खाना देखा तो वे वहीं बैठ गए। जो थोड़े समझदार थे वे आगे राग–रंग में मस्त हो गए। जो और ज्यादा समझदार थे वे आगे गए उन्होंने माया के ढेर पड़े हुए देखे तो उन्होंने सोचा कि इससे सस्ता सौदा और क्या है? बादशाह का कोई बेटा नहीं इसलिए वह लुटा रहा है, वे माया की पोटलियाँ बाँधकर ले गए और जो लोग आगे गए उन्होंने देखा कि मुफ्त में स्त्रियाँ मिल रही हैं क्यों न इनके साथ हास–विलास किया जाए।

एक मजबूत दिलवाला नौजवान था उसने सोचा आगे जाकर देखें क्या है? क्यों न बादशाह को ढूंढा जाए अगर बादशाह को ढूंढ लेंगे तो लड़की

भी मिल जाएगी और राज्य भी मिल जाएगा। वह मजबूत दिल आदमी न स्वादों पर रूका, न माया पर रूका, न उसने भोग विलास में रूचि रखी। वह और आगे गया तो उसने बाग में माली के भेष में राजा को फटे हुए कपड़े पहने हुए देखा।

पहलवान को पहलवान पहचान लेता है। उस नौजवान ने राजा से कहा, ''अब आप प्रकट होकर अपना वादा पूरा करें।'' राजा ने उस नौजवान को अपनी छाती से लगाकर कहा, ''बेटा, मैं अपनी लड़की की शादी तेरे साथ करता हूँ और तुझे अपना राजपाट भी देता हूँ।''

यह तो एक कहानी है लेकिन सच्चाई यह है कि प्रभु रूपी राजा, इस दुनिया की राजधानी में आकर गुप्त रूप में बैठ गया है। उसने अपनी भक्ति रूपी कन्या की शादी किसी अच्छे मजबूत दिल वाले आदमी के साथ करनी है। वह शर्त रख देता है कि जो मुझे ढूंढ लेगा, मैं उसे अपनी भक्ति रूपी कन्या और सच्चखंड का तख्त–ताज सब कुछ ही दे दूँगा।

हम सारे ही इस मैदान में निकलते हैं लेकिन कोई हुकूमत में फँस जाता है, कोई शराब–कबाब में फँस जाता है। कोई मजबूत दिल आदमी ही दुनिया के पदार्थों की तरफ नहीं झाँकता। उसे सिर्फ प्रभु से मिलने की तड़प है। वह अंदर जाकर प्रभु को प्रकट कर लेता है कि हे प्रभु, अब आप पर्दा उतार दें मैंने आपको ढूंढ लिया है। प्रभु अपने तख्त का ताज उसके सिर पर रख देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जाँका हुक्म दरगह चले सो तिसको नदर न आवे तले

सन्त हमें अंदर जाकर कमाई करने के लिए कहते हैं। अंदर जाकर सच्चाई का पता लगता है कि ऊपर के मंडलों में उनके आगे कौन–कौन सी ताकतें नमस्कार करती हैं। हमें भी चाहिए कि सन्तों ने हमें जो आदर्श बताया है उसे हम अपनी आँखों के आगे रखें। उसे पूरा करने के लिए हमें मेहनत करनी चाहिए, नाम की कमाई करनी चाहिए। ***

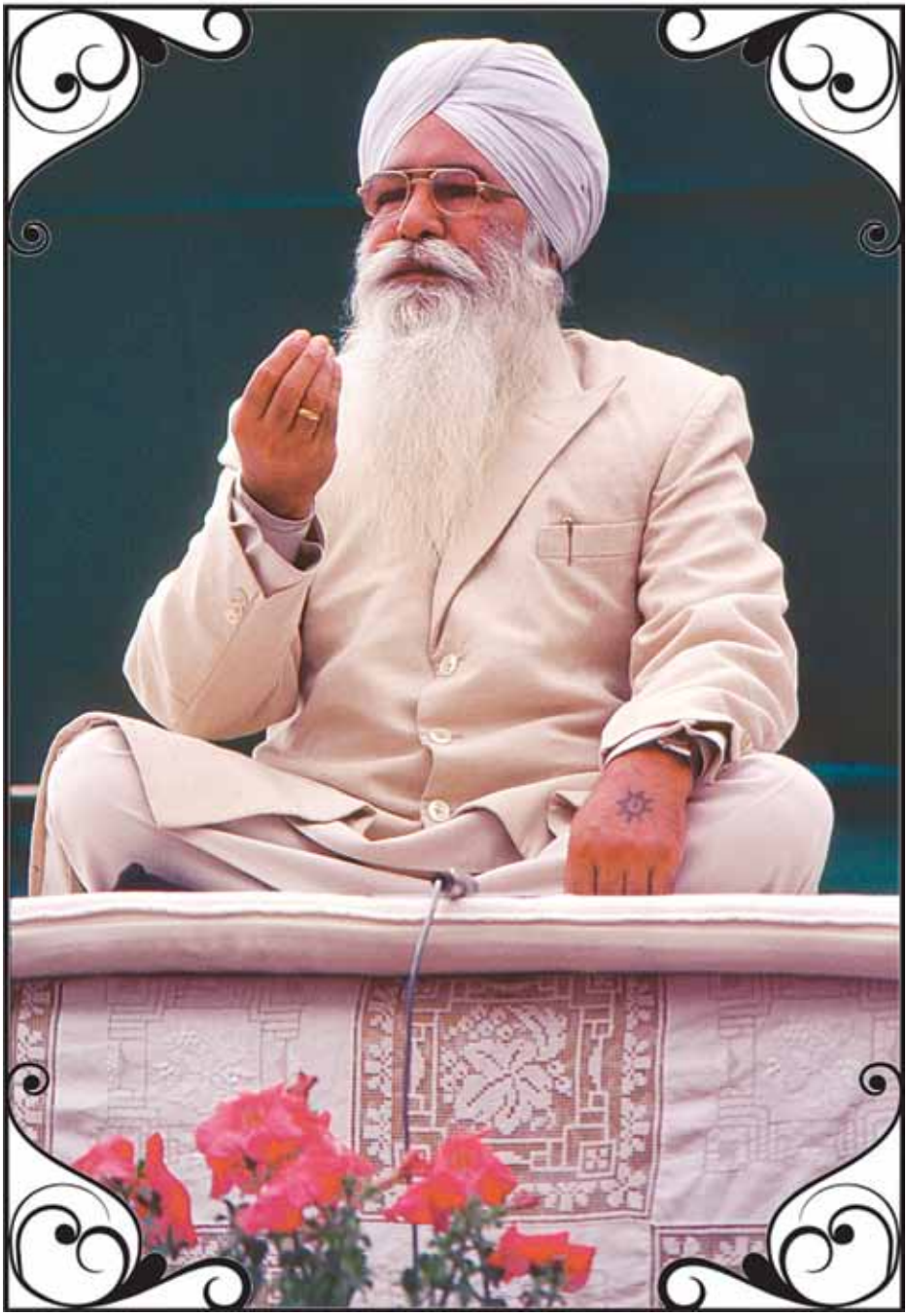

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सूक्ष्म मंडल के देवी-देवता

31 अक्टूबर 1990 DVD 611(3) 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी: *– मैंने एक सतसंग में सुना है कि गुरु का मौत के फरिश्ते के साथ वार्तालाप होता है। मौत के फरिश्तों ने ऐसा क्या किया होता है जिसकी वजह से उन्हें यह काम मिलता है?*

बाबा जी: – आप सबको पता है कि जो कुछ बाहर इस स्थूल दुनिया में चल रहा है, यह अंदर की नकल है। सच्चाई अंदर है इसलिए सन्त जोर देकर कहते हैं कि आप अंदर जाकर देखें। महात्मा पीपा ने भी कहा है:

जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजें सो पावें

स्थूल दुनिया के मुकाबले सूक्ष्म दुनिया साफ है, यहाँ के मुकाबले वहाँ ज्यादा सच्चाई है। जिस तरह स्थूल दुनिया में मौत का वक्त तय है उसी तरह वहाँ भी मौत का समय तय है। यहाँ उम्रें छोटी हैं, वहाँ बहुत लम्बी उम्रें हैं अगर इतिहास के सबूत देखे जाएं कि ब्रह्मा की कितनी उम्र है? दुनिया के कितने युग निकलते हैं जब उसका एक दिन बीतता है। विष्णु और शिव की कितनी उम्र है? इसी तरह सब फरिश्ते और फरिश्तों के बादशाह इन्द्र के राज्य की कितनी अवधि है?

मौत और पैदाईश सूक्ष्म देश में भी है। वहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच डाकु सूक्ष्म रूप में हर एक के पीछे लगे हुए हैं। इसी तरह सूक्ष्म से कारण दुनिया साफ है, वह इससे भी अच्छी है लेकिन मौत–पैदाईश वहाँ भी है। सन्तमत के साथ इसका कोई कनेक्शन नहीं है। ये हिसाब–किताब ऋषियों–मुनियों के होते हैं क्योंकि उनकी पहुँच ब्रह्म तक ही होती है। सन्त स्वर्ग–नरक को कोई अहमियत नहीं देते। कबीर साहब कहते हैं:

कवन नरक किआ सुरग स्वर्ग सन्तन दोऊ रादे
हम काहू की काण न कढते अपने गुर परसादे

सतसंगी को हिदायत होती है कि गुरु आपके साथ है, वह आपको इन मंडलों में रुकने नहीं देता, आगे लेकर जाता है। काल का राज्य त्रिलोकी तक है। ये सारे फरिश्ते काल के नुमाइंदे हैं, समय आने पर इनकी भी ड्यूटी बदल जाती है। इनके लिए गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा हैः

काल पाइ ब्रह्म बप धरा काल पाए सिवजू अवतरा
काल पाइ बिसनु प्रकासा सकल काल का किआ तमासा

यह सब काल का खेल है। आप अनुराग सागर में इन देवताओं की कहानियाँ पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं कि इनकी क्या ड्यूटी है, ये क्या करते हैं। हिन्दुस्तान में हिन्दुओं ने देवी–देवताओं पर भरोसा रखा हुआ है। मंदिरों में ज्यादातर इन्हीं देवताओं की मूर्तियाँ रखी हुई हैं। ये लोग न सन्तमत की तरफ आते हैं न इन्हें कोई दिलचस्पी होती है और न ही ये लोग किसी को सन्तमत की तरफ आने के लिए प्रेरित करते हैं। ये कहते हैं, ''ब्रह्मा, शिव से बड़ा कौन हो सकता है?'' अगर इनसे पूछें कि ब्रह्मा या शिव कब हुए तो इनके पास इसका कोई जवाब नहीं होता।

जिस तरह आप हिन्दुस्तान में आए हैं या मैं आपके मुल्क में जाऊँ तो हमें उस मुल्क में जाने के लिए वीजा लेना जरुरी होता है। वहाँ की सरकार ने जो राजदूत तय किए हैं उनसे मिलाप करके ही हम एक–दूसरे के मुल्क में आ जा सकते हैं। राजदूत सरकार का खास बन्दा होता है, सरकार को उस बंदे पर ऐतबार होता है।

इसी तरह ये फरिश्ते काल के नुमाइंदे हैं, इन्हें हर जीव का हिसाब रखने का हुक्म होता है। इन नुमाइंदो की किसी के साथ कोई दोस्ती–दुश्मनी नहीं होती। जो जैसा करता है उसे उसका भुगतान करवाने का हुक्म होता है, जिस तरह राजदूत अपनी सरकार को रिपोर्ट भेजते हैं। इसी

तरह इनमें शिरोमणि देवता है जिसे धर्मराज कहकर लिखा हुआ है, उसे सच्चा न्याय करने का हुक्म होता है, जो जैसा कर्म करता है उससे वैसा ही भुगतवाया जाता है। धर्मराज को यह भी हुक्म होता है कि मालिक के प्यारों के नजदीक नहीं जाना, उनका इज्जत–मान करना है। जिस तरह उस मुल्क का खास नुमाइंदा उस राजदूत के पास जाए तो वह उसका बहुत आदर करता है, अंदर भी ऐसी ही नकल बनाई हुई है।

काल ने सतपुरुष को अपनी सेवा से खुश करके आत्माएं माँग ली। सतपुरुष ने उसे आत्माएं दे दी, इसने आगे तन–मन का पिंजरा इख्तियार कर लिया। चाहे हम स्वर्ग में हैं, चाहे नरक में हैं, चाहे नर देही में हैं, हमारे लिए तन–मन का पिंजरा है। जहाँ पिंजरा है वहाँ साथ ही मन भी है, जहाँ मन है वहाँ शान्ति नहीं। जहाँ तन है वहाँ दुख और परेशानियाँ हैं।

जब मैं पहले टूर पर घाना गया, वहाँ हिन्दुस्तान का राजदूत सतसंग में भी आता रहा। उस राजदूत ने हमें अपने घर बुलाया चाय–पानी का इंतजाम किया बहुत प्यार दिखाया। उसके अंदर यही प्यार था कि यह हमारे हिन्दुस्तान के सन्त हैं। हमारे अंदर यह था कि यह हमारे हिन्दुस्तान का राजदूत है। अगर उसके पास कोई सिफारिश करनी हो तो दुनियावी बंदा भी सिफारिश मान लेता है। दुनियावी मिसालें देने से आपके लिए इस सवाल का जवाब समझना आसान हो जाएगा।

सबसे पहले मन की ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा नाम भक्ति की तरफ न आए। मन नाम भक्ति की तरफ आने ही नहीं देता, अंदर अनेक भ्रम–वहम डाल देता है; हमेशा परेशान करता है। जब हम स्थूल दुनिया छोड़कर अंदर जाते हैं अगर पूरा गुरु न हो तो सूक्ष्म में जाकर ये फरिश्ते रूकावटें डालते हैं। काल की ये शक्तियाँ अंदर पहुँची हुई आत्मा को लालच देती हैं और डराती भी हैं कि तुमने आगे जाकर क्या लेना है? कबीर साहब कहते हैंः

डाकनी साकनी बहो किलकारे

यहाँ काल की शक्तियाँ ललकारती हैं। कई बार भयानक रूप धारण करके भी सेवक को डराती हैं। कबीर साहब कहते हैंः

सतनाम सुन भागे सारे ऐसा पुरुष दरबारा

पहली बात तो यह है कि गुरु हर समय सेवक के साथ है। जब सेवक सिमरन करता है तो सतगुरु हाजिर होता है। 'शब्द–नाम' के सिमरन में बहुत शक्ति होती है। गुरु नानकदेव जी महाराज भी पहुँची हुई आत्माओं को अपनी बानी में अगुवाही देते हैंः

शब्द सुणे ओह दूरो भागे, मत हर जम मारे बेपरवाहा हे

सन्तों ने यह परंपरा चलाई है कि औरत–मर्द के जामें में मजबूत रहना है, यह मर्द और औरत दोनों के लिए ही जरूरी है। एक बार शादी हो जाए तो उस शादी को नहीं तोड़े। हर जगह जाकर विषय–विकार न भोगें। अगर हम भजन करके अंदर सूक्ष्म देश में जाएंगे तो अंदर ये शक्तियाँ मर्दों को औरत का रूप धारण करके लालच देती हैं, ''तूने आगे जाकर क्या लेना है? तुम हमारे साथ भोग भोगो, हम तुझे बादशाह बना देंगी।'' अगर मर्द वहाँ रूक जाता है तो उसकी आगे की तरक्की बंद हो जाती है अगर औरत है तो उसे नूरी मर्द मिलते हैं वे कहते हैं, ''हम तुम्हें यहाँ की रानी बना देंगे, आगे जाकर क्या लेना है।'' इसलिए सन्त पतिव्रता धर्म के ऊपर जोर देते हैं कि जिसका यहाँ चरित्र ठीक नहीं वह आगे जाकर फेल हो जाता है।

आप विश्वामित्र की कहानी पढ़ते हैं, विश्वामित्र श्री रामचन्द्र जी महाराज का शक्तिशाली जनरल था। उसने साठ हजार वर्ष बहुत सख्त तप किया था, उसकी स्वर्ग तक रसाई थी। वह जब स्वर्ग में गया तो उसे उर्वशी परी ने ठग लिया, शकुन्तला पैदा हुई। पहले तो शहरों में विश्वामित्र का नाटक ही करते थे अब उस पर फिल्म ही बना दी है।

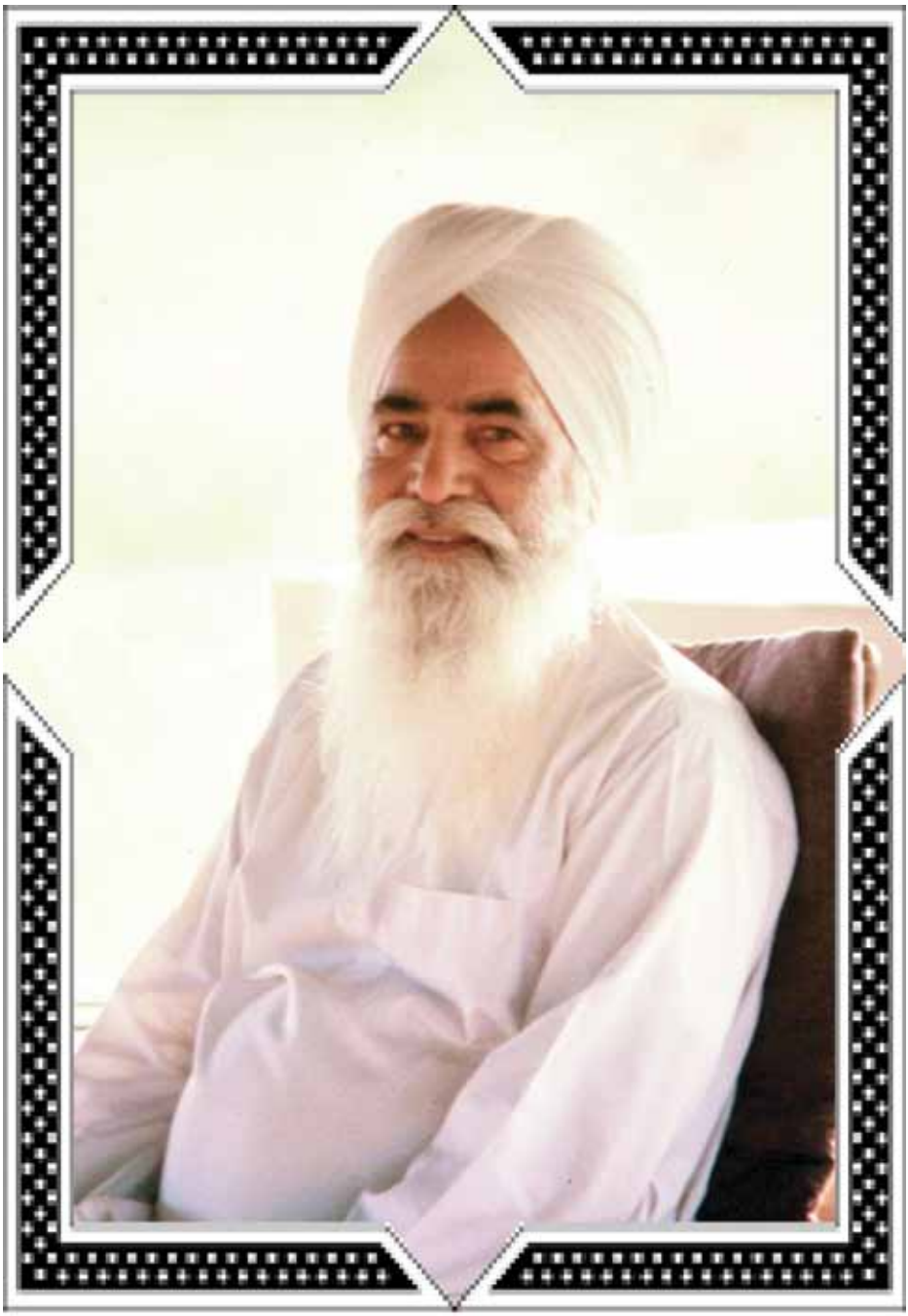

जिन ऋषि–मुनियों की स्वर्ग तक पहुँच थी, स्वर्ग के सूक्ष्म भोगों ने उन्हें गिरा दिया। इसी तरह यह हर जीव को नाम भक्ति की तरफ से हटाते हैं। अगर कोई सतसंगी नाम लेकर बुराई करता है तो काल उस वक्त गुरु को दिखाता है कि देख! तूने इसे नाम दिया है यह कितना बुरा है, क्या यह नाम के काबिल था? तू इससे अपना नाम वापिस ले ले। जीव के दाईं तरफ 'शब्द रूप' गुरु बैठा है और बाईं तरफ काल बैठा है, इसी जगह इनकी वार्तालाप होती है। सन्तों का यह कायदा है कि सन्त जीव को जो चीज एक बार दे देते हैं फिर उसे वापिस नहीं लेते।

अगर कोई लड़का बदमाशी करता है, कोई उसके पिता को शिकायत करता है कि तेरा बेटा कितना बदमाश है तू इसे अपने घर से बाहर निकाल दे। समझदार पिता मायूस होता है, अपने बेटे की हरकत से खुश नहीं होता फिर भी वह अपने बेटे को घर से निकालने के लिए तैयार नहीं होता। पिता कहता है, ''मैं इसे समझा लूँगा।'' इसी तरह गुरु भी अंदर काल शक्ति से यही कहता है, ''मैं इसे समझाऊँगा यह ठीक हो जाएगा।''

आला दर्जे के सतसंगियों को पता है कि लोग सन्तों को बाहर भी ताना मारते हैं कि यह सतसंगी बना है, नामलेवा भी है फिर भी यह बुराई नहीं छोड़ रहा। इसी तरह सन्तों को सेवक के मुत अल्लिक अंदर भी बहुत कुछ सुनना पड़ता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त नहीं उड़ते, उन्हें उनके सेवक उड़ाते हैं। सेवक जितने अच्छे होंगे उतना ही गुरु का नाम चमकेगा और गुरु की मान्यता ज्यादा होगी।''

जो सेवक अभ्यास के जरिए जीते जी अंदर जाते हैं, उन्हें पता है कि सतगुरु किस तरह एक–एक रूह के लिए काल के साथ झगड़ा करता है, किस तरह उसे छुड़ाकर ले जाता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल ने कर्जा लेना है वह कर्जा शिष्य दे या गुरु दे। काल एक पाई की भी रियायत नहीं करता, उसे यह भी अधिकार होता है कि वह उसका

क्या अफजाना ले, वह सब कुछ सन्तों को उतारना पड़ता है।'' अगर हम जीते जी ऊपर नहीं जाते तो सतगुरु आखिरी वक्त आत्मा को अंदर तीसरे तिल पर संभाल लेता है। अगर यहाँ न संभाले तो अंड में जाकर भी संभाल लेता है लेकिन वह अपनी मौज जरूर बरताता है।

अगर सतसंगी शान्त है, उसके आस–पास सतसंगी हैं तो वह घरवालों या आसपास वालों को कुछ जरूर बताकर जाता है। अगर उस समय वहाँ कोई बेसतसंगी है या वह बीमारी की वजह से कोई खास बात नहीं कर सकता तो अंदर गुरु जरूर उसकी संभाल करता है। अंदर जो भी वार्तालाप होता है, आत्मा उस वार्तालाप को देखती और सुनती है।

जब हमारी आर्मी अमृतसर साहब में थी, उस समय हमारा आँखों देखा वाक्या है। महाराज सावन सिंह जी का एक प्रेमी चोला छोड़ने लगा, जब वह आँखों के पीछे गया तो डॉक्टरों ने कह दिया कि यह खत्म हो गया है। परिवार के लोग तैयारी करने लगे, दो–तीन घंटे बाद वह प्रेमी फिर शरीर में आ गया। उस प्रेमी ने बताया कि जब मैं अंदर गया तो वहाँ एक बहुत बड़े आकार का बंदा एक बड़ी बही लेकर बैठा हुआ था। उसने अपनी बही देखकर कहा, ''यहाँ तो इसका हिसाब नहीं है, मैंने तुमसे जिसे लाने के लिए कहा था, वह कोई और बंदा है।'' कहने का भाव उसने बताया जिस तरह महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पाई–पाई का हिसाब रखा जाता है, मैं वह सब कुछ देख आया हूँ; सब सच है।

उन दिनों महाराज सावन सिंह जी मजीठा रोड पर सतसंग देने गए, उस समय एक सतसंगी चोला छोड़ने लगा। महाराज जी के साथ उनके पाठी करतार सिंह और भान सिंह थे। उन्होंने अपने पाठियों से कहा, ''देखकर आओ कि मौत के वक्त सतगुरु आता है या नहीं?'' वे दोनों गए, उस सतसंगी ने बताया, ''गुरु आया है और मैं जा रहा हूँ।''

प्यारेयो, अगर ऊपर सच्चखंड में गुरु की रसाई नहीं, वह कभी देवताओं से मिला ही नहीं तो वह हमें छुड़वाकर कैसे लेकर जाएगा? गुरु का इन देवताओं के साथ संपर्क होता है। दाईं तरफ 'शब्द रूप' गुरु बैठा है और बाईं तरफ काल बैठा है। जब आत्मा जाती है, अंदर गुरु आवाज देता है और काल भी आवाज देता है। आपको रोज बताया जाता है कि आपने दाईं तरफ की आवाज सुननी है, बाईं तरफ की आवाज नहीं सुननी। आपका रास्ता दाईं तरफ है, जब गुरु दाईं तरफ से आवाज देता है तो सेवक उसी तरफ चला जाता है और गुरु उसे संभाल लेता है। जिन आत्माओं को नाम नहीं मिला, गुरु नहीं मिला काल उन्हें इसी जगह पर संभालता है, जब काल आवाज देता है आत्मा उसी तरफ चली जाती है। इस बारे में तुलसी साहब बयान करते हैंः

काल दाड़ में आए चबानी तब ठरके नैनन में पानी

गुरु जब आत्मा को लेने के लिए आता है उस समय गुरु का स्वरूप नूरी, सुंदर और प्यारा होता है, गुरु का स्वरूप देखकर आत्मा को खुशी होती है। वहाँ काल का भयानक रूप होता है, काल का मुँह खुला होता है, वह आत्मा को अपनी दाड़ो में चबा जाता है।

जब हम सच्चखंड पहुँचे हुए महात्माओं की बानियाँ पढ़ते हैं उन बानियों में अंदर का सारा हाल और पूरे निशान होते हैं कि किस तरह गुरु आकर आत्मा को संभालता है और किस तरह काल भी बराबर आता है।

हमारा फर्ज बनता है कि हम गुरु की हिदायत के मुताबिक अपना भजन–सिमरन करें, गुरु पर भरोसा रखें। हमें नामदान के समय जो हिदायतें बताई गई है हमें उस विधि के मुताबिक भजन–सिमरन करना चाहिए। गुरु अभूल शक्ति होती है, गुरु दयावान होता है। गुरु जरूर अपनी ड्यूटी पर पहुँचता है लेकिन सेवक की भी ड्यूटी है कि वह प्रेम–प्यार से अपना भजन–सिमरन करे। ***

की कहां ते किस मुँह नाल आखां

की कहां ते किस मुंह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु अैब मेरे x 2
की कहां ते किस.....

1 किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंझ सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंझ आख सुणावां तैनूं जी,
की कहां ते किस.....

2 भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हत्थां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तकां हुण किस मुंह नाल दाता x 2 तेरियां सोहणियां अखां विच,
की कहां ते किस.....

3 हर इक अैब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज्ज लवीं तूं परदा दाता x 2 जिवें अज तक कज्जया जी,
की कहां ते किस.....

4 पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जेहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मां ते,
की कहां ते किस.....

5 अजायब सतगुरु दाता तूं हैं, तूं ही लाज रखावेंगा,
अैबां भरे 'गुरमेल' पापी नूं, तूं ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तूं ही पार लगावेंगा,
की कहां ते किस.....

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा

मुद्दत होई यार विछड़ेयां पा फेरा,
रूल गए विच संसार विछड़ेयां पा फेरा,

1 होई कोंण खुनामी, जो तूं मुड़ेया इ ना x 2
तरले ओसियां पाए, तूं ते सुणेया इ ना,
आजा आजा आजा x 2 मुड़ेया पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2 लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे x 2
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता x 2 बझदा ना ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

3 मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है x 2
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य x 2 जे धरजां मैं ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

4 हिम्मता टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया x 2
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे x 2 पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5 रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा x 2
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके x 2, बैह जा इक वेरां
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझावां जी
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

1 दु:ख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे x 2
सोहणेया दर्श बिना चैन नहीं औंदा वे x 2
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

2 दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे x 2
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे x 2
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

3 तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी x 2
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी x 2
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

4 मसां मसां जिंदड़ी तें प्यार विच रंगी वे x 2
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे x 2
बण सजण तू डोली मेरी चा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

5 समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी x 2
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी x 2
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

6 प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावे तूं x 2
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं x 2
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

दु:ख कीनूं दस्सां

दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दु:ख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे ताई मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड दित्ता जित्थे x 2 ऐह फानी संसार आ
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दु:खां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां

दाता तेरियां रूहा तेरे दर आ गईयां x 2
बख्श देयो मेहर करके दु:खड़े असी सह रहियां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

1 आजा कोले बैठ असाडे दिल दियां गल्लां करिए
दु:ख–सुख दर्द सुनेहे सजणा तेरे कोले कहिऐ x 2
बात नी साडी पुछदा कोई, तेरे दर हुण आ गईया
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

2 वक्त गवाया गल्ली बाती गफलत दे विच आके
पाप कमाए बहुते सारे मन दे कहणे आके x 2
बहुत हो गया काल पसारा, तेरे चरणी पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

3 दु:ख वी है ते गिला वी दाता तेरे विछोड़े ताईं
आ ईक वारी गल नाल ला ले छड्ड न मुड़ तूं जाईं x 2
रो लए सारी उम्र बथेरा, वापस घर नूं आ गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

4 कहे 'अजायब' सुण कृपाल प्यारे तेरे वारे जाईऐ
तक्क ले साडे वल्ल प्यारे पार उतारे पाईऐ x 2
बख्श दे दाता अवगुण साडे, सी माड़े कर्मीं पे गईयां
दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां x 2

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

1 तू ही मेरी झोली दे विच खैर प्यार दी पाई
प्यार दी तेरी ईक बूँद मेरी सगली होंद रोशनाई, x 2
आप ही हुण इस रोशन रूह नूं x 2 पैरां हेठ न रोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

2 तन वी तेरा देणदार है रूह वी है करजाई,
तन हुण मेरा रोगां खादा रूह वी फिरे घबराई x 2
हुण इस मन दे झखड़ा अग्गे x 2 रह न सकां अडोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

3 अजे वी चेते दे तल उत्ते तेरा ही परछावां
की होया जे बदल गया है तेरा वे सिरनावां x 2
किद्दर जावां किद्दर लब्बां x 2 फिरदी हां अनभोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

4 अजे वी ख्वाबां दे विच जगदे याद तेरी दे दीवे,
साह तेरे दी धड़कन अजे वी हिक मेरी विच जीवे x 2
राह तक तक मैं ओसियां पावां x 2 काग बुलावा कोल,
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल x 2

5 'अजायब' मन दी मिट्टी उत्ते उकरे रोसे हासे
कन्ना दे विच अजे वी गूंजण कृपाल दे बोल पतासे x 2
मैं सुहागण तेरा राह वे तकदी x 2 हुण आ दरवाजा खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल
दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा अलविदा ही बोल

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
क्यों ना सुने गुरु की बात, x 2
मन मेरे क्यों ना.....

1 सारा दिन, अहंकार में रहता
गुरु का सिमरन, तू नहीं रटता x 2
काहे का करे अहंकार,
मन मेरे क्यों ना.....

2 पाँच विषयों में, हर पल खेले
दिखावे के हैं, हम गुरु के चेले x 2
कुछ तो सोच विचार,
मन मेरे क्यों ना.....

3 बातों में सबसे, बड़ा सतसंगी,
सच में तो है, तू पाखंडी x 2
कभी तो बन मेरा यार,
मन मेरे क्यों ना.....

4 सेवा करे तो, मन की मत से,
मतलब नहीं, तोहे गुरु की संगत से x 2
खुश किसको करे मेरे यार,
मन मेरे क्यों ना.....

5 कबूल गुनाह, अपने गुरु के आगे,
डर के जिससे, काल भी भागे x 2
'अजायब', कर कृपाल से प्यार,
मन मेरे क्यों ना.....

धन्य अजायब

सतसंग के कार्यक्रमों का विवरण :–

1	11 जनवरी–15 जनवरी 2023	बुधवार से रविवार	मुम्बई
2	01 फरवरी–05 फरवरी 2023	बुधवार से रविवार	16. पी.एस. आश्रम
3	03 मार्च–05 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	16. पी.एस. आश्रम
4	17 मार्च–19 मार्च 2023	शुक्रवार से रविवार	पठानकोट (पंजाब)
5	31 मार्च–02 अप्रेल 2023	शुक्रवार से रविवार	16. पी.एस. आश्रम

RNI No - RAJHIN/2003/9899

सतगुरु हाथ से डोर नहीं छोड़ता ढीली जरूर कर देता है। गुरु बहुत समझदारी से नाम देता है, वह नाम देते हुए कभी धोखा नहीं खाता। गुरु की जिम्मेदारी होती है, वह बहुत भरोसे वाला होता है।